PEZZOTTAITE JOURNALS

Volume 7, Number 4, October – December' 2018
ISSN (Print): 2319-9059, (Online): 2319-9067
SJIF (2016): 7.194, SJIF (2017): 8.924
H5-Index: 1, H5-Median: 1, H-Citations: 1

INDIAN FOREIGN POLICY IN THE REFERENCE OF PAKISTAN

Dr. Vipul Yadav[6]

ABSTRACT

भारत का भूभाग विश्व के क्षेत्रफल का 2.4 प्रतिषत है, जबकि यहॉ पर लगभग विश्व की 17 प्रतिषत जनसंख्या निवास करती है। इस प्रकार भारत देश विश्व मे आकार की दृष्टि से 7वां व जनसंख्या की दृष्टि से चीन के बाद दूसरा स्थान रखता है, अतः विश्व के इस विशाल देश की विदेश नीति का विश्व में महत्त्व अत्यधिक है। इस विषय में कोई संदेह नहीं है कि भारत ने सदैव अपने पड़ौसी मुल्कों के साथ अच्छे व सौहर्दायात्मक सम्बंध बनाए रखने का भरसक प्रयत्न किया है। पाकिस्तान के संदर्भ में भी यह अपवाद नहीं है। बल्कि मुख्य तौर पर यदि देखा जाए तो पाकिस्तान में जो जनता निवास कर रही है वह कभी भारत की ही जनता रही है बेशक इनका धर्म कोई भी रहा हो। अगर भारत की विदेश नीति के विषय में देखा जाए तो भारत ने सदैव भाईचारे व दोस्ताना कदम के साथ–साथ एक दूसरे की मदद करने को प्राथमिकता प्रदान की है। लाल बहादुर जी, इंदिरा गाँधी जी द्वारा पाकिस्तान से ऐतिहासिक समझौतो को किया गया। परन्तु पाकिस्तान अपनी आदतों से बाज नहीं आया है। वर्तमान में भाजपा पार्टी को केन्द्र में पूर्ण बहुमत प्राप्त है, पर बातचीत की पेशकश सदैव, भारत के द्वारा ही की गई है। यह भविष्य के गर्भ में है कि पाकिस्तान में तहरीर–ए–हिंद पार्टी के प्रधानमंत्री इमरान खान इस विषय में कितना सकारात्मक दृष्टिकोण दिखाते हैं।

KEYWORDS

साम्यवादी, गुटबंदिया, शरणार्थी, निर्माण तत्त्व, विदेश नीति

भारत का भूभाग विश्व के क्षेत्रफल का 2.4 प्रतिषत है, जबकि यहॉ पर लगभग विश्व की 17 प्रतिषत जनसंख्या निवास करती है। इस प्रकार भारत देश विश्व में आकार की दृष्टि से 7वां व जनसंख्या की दृष्टि से चीन के बाद दूसरा स्थान रखता है, अतः विश्व के इस विशाल देश की विदेश नीति का विश्व में अत्यधिक महत्त्व है। भारत का यह इतिहास रहा है कि इसने कभी किसी देश पर आक्रमण नहीं किया है। सदैव दूसरे देशों के साथ सांस्कृतिक व व्यापारिक सम्बन्ध अच्छे प्रकार से रखने का प्रयत्न किए हैं।

किसी भी देश की विदेश नीति के निर्माण तत्त्व (भारत के संदर्भ में)

भौगोलिक तत्त्व

नैपोलियन बोनापाट ने कहा था कि '' किसी देश की विदेश नीति उसके भूगोल द्वारा निर्धारित होती है। ''किसी भी देश की भौगोलिक परिस्थितियों का उस देश की विदेश नीति में महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। भारत एशिया का एक बड़ा देश है, व यह एक महाद्वीप की विशेषता रखता है। इसकी समुद्री सीमाएं बहुत बड़ी है। उत्तर में हिमालय पर्वत से यह चीन जैसे साम्यवादी राष्ट्र से सुरक्षित है। इसलिए अपनी समुद्री सीमा व पर्वतीय सीमा की सुरक्षा की दृष्टि से यह किसी भी राष्ट्र के गुट में सम्मिलित नहीं हुआ। भारत का यह मानना रहा है कि ब्रिटेन के उपनिवेशों के रूप में द. एशिया के राष्ट्रो के स्वाधीन होने के बाद में राष्ट्र स्वयं अपनी सीमाओं की रक्षा करने में स्वतंत्र हैं। आर्थिक तत्व को ध्यान में रखते हुए भारत ने किसी भी गुट में सम्मिलित न होना ही श्रेयस्कर समझा। भारत अपने विकास के लिए सभी देशों के साथ मैत्री का सम्बन्ध रखकर विदेशी सहायता प्राप्त करना चाहता था।

विचार धाराओं का प्रभाव

भारत की विदेशी नीति शांति व अहिंसा पर आधारित थी। हडमन लिखते है कि ''गाँधी के शांतिवाद ने देश को यह भरोसा दिलाया कि विश्व में शांति समझौते के द्वारा ही स्थापित हो सकती है। ''

गुटबंदिया

भारत की आजादी के समय विश्व दो गुटों में विभाजित था। दोनों गुटों के मध्य शीत युद्ध की स्थिति विधमान थी। यह माना जाता है कि चौथा विश्व युद्ध कभी नहीं होगा। क्योंकि अगर तीसरा विश्व युद्ध लड़ा गया तो दुनिया ही समाप्त हो जाएगी।

[6]Assistant Professor, Progressive Learning College of Education, Haryana, India, vipulyadav85@gmail.com

PEZZOTTAITE JOURNALS

Volume 7, Number 4, October – December' 2018
ISSN (Print): 2319-9059, (Online): 2319-9067
SJIF (2016): 7.194, SJIF (2017): 8.924
H5-Index: 1, H5-Median: 1, H-Citations: 1

सैनिक

सैनिक दृष्टि से भारत शक्तिशाली नहीं था। अपनी रक्षा के लिए वह पूरी तरह विदेशों पर निर्भर था। इसीलिए भारत ने सभी देशों के साथ मैत्री बनाये रखी।

राष्ट्रीय हित

पंडित जवाहर लाल नेहरू ने संविधान कथा में कहा था ''किसी भी देश की विदेश नीति की आधारशिला उसके राष्ट्रीय हित की सुरक्षा होती है और भारत की विदेश नीति भी ध्येय यही है।''

भारत–पाक सम्बन्धों को प्रभावित करने वाली समस्याए

कश्मीर विवाद

स्वतंत्रता के बाद भारत और पाकिस्तान दो नये देश बने, वही देशी रियासतों को यह स्वतंत्रता प्रदान की गई कि वो किसी भी देश में स्वतंत्र रूप से शामिल हो सकते हैं। कश्मीर रियासत की स्थिति कुछ विशेष प्रकार की थी। भारत के उत्तर पश्चिम पर पाकिस्तान से यह इलाका सटा हुआ था। यहॉ का शासक एक हिन्दू राजा था, जबकि जनसंख्या का बड़ा भाग मुस्लिम लोगों का था। 22–10–1948 को कबायलियों ने कश्मीर पर आक्रमण कर दिया। आक्रमणकारी श्रीनगर से 25 मील दूर बारामूला तक आ गये, 26–10–1948 को कश्मीर के हिन्दू राजा ने भारत सरकार से मदद की गुहार लगाई व कश्मीर रियासत को भारत में विलय करने के लिए भी निवेदन किया। भारतीय सेना ने शीघ्र ही पहुंचकर स्थिति को नियंत्रण में ले लिया व जनमत संग्रह करवाकर कश्मीर को भारत के हिस्से के रूप में सम्मिलित कर लिया। 01–01–1948 भारत सरकार द्वारा संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद में यह शिकायत की गई कि कबायलियों ने पाकिस्तान से मदद लेकर भारत के एक हिस्से कश्मीर पर आक्रमण कर दिया है, इससे अशांति पैदा हो गई है। पाकिस्तान ने भी भारत पर कश्मीर के विवाद को अन्यायपूर्ण माना। स्थिति की समीक्षा के लिए सुरक्षा परिषद ने अमेरिका, कोलम्बिया, चेकोस्लोवाकिया, अर्जेण्टीना व बेल्जियम को सदस्य नियुक्त करके समझौता करवाने के उद्देश्य से भेजा। दोनों पक्षों द्वारा लम्बी वार्त्ता के बाद 01–01–1949 को युद्ध विराम के लिए सहमति हो गई। जनमत संग्रह करवाया गया। युद्ध विराम रेखा निर्धारित होने के बाद पाक ने भारत के 32,000 वर्गमील क्षेत्रफल को 'आजाद कश्मीर' की संज्ञा दे दी।

पाकिस्तान द्वारा अमेरिका से 1954 में सैनिक संधि कर ली गई। वह 1955 में सैण्टो का सदस्य बनकर अपने कुछ अड्डे अमेरिका को देने के लिए तैयार हो गया। भारत को यह डर पैदा हो गया कि पाकिस्तान कश्मीर को 'हथियाने के लिए स्वयं की सैनिक शक्ति बढ़ा रहा है। 1950 में पंडित जवाहर लाल नेहरू ने पाकिस्तान से ''युद्ध वर्जन संधि *(No War Pact)* करने का प्रस्ताव रखा, परंतु पाकिस्तान ने उसे स्वीकार न किया। 06–2–1954 को कश्मीर की संविधान सभा ने एक प्रस्ताव पास करके जम्मू व कश्मीर का भारत में विलय करने की पुष्टि कर दी। 14–5–1954 को अनुच्छेद 370 के अंतर्गत भारत ने संविधान संशोधन करके कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा दे दिया। 26 जनवरी 1957 को जम्मू कश्मीर का संविधान लागू हो गया। पाकिस्तान द्वारा संयुक्त राष्ट्रसंघ में बार–बार कश्मीर के विषय में मुद्दा उठाया जाता रहा है व उसने यह मांग की कि संयुक्त राष्ट्र संघ की आपात सेनाओं को भेजकर कश्मीर में जनमत संग्रह करवाया जाए, जिसका प्रयास फ्रांस, अमेरिका, ब्रिटेन द्वारा समर्थन भी किया गया, परन्तु सोवियत संघ द्वारा इस पर वीटो का इस्तेमाल करके यह प्रस्ताव रूकवा दिया गया। भारतीय प्रतिनिधी ने एक ऐतिहासिक भाषण में कहा कि ''मूल प्रश्न यह नहीं है कि जम्मू कश्मीर में संविधान लागू हो या ना हो। मूल समस्या यह है कि जम्मू कश्मीर से अभी तक पाकिस्तानी सेनाए क्यों नहीं गयी हैं।''

हैदराबाद विवाद

हैदराबाद के चारों और भारत का भू–भाग था भौगोलिक दृष्टि से यह भारत में ही मिल सकता था। हैदराबाद रियासत का निजाम स्वयं की रियासत को एक स्वतंत्र देश के रूप में रखना चाहता था, इसके लिए पाकिस्तान की शह उसे प्राप्त थी लेकिन भारत को भ्रम में रखकर वह विलय की पेशकश भी करता रहा। वह दक्षिणी भारत में इस्लाम का प्रचार करके मुस्लिम वर्चस्व स्थापित करना चाहता था। रियासत में अराजकता फैल गई, भारत को सैनिक कार्यवाही करती पड़ी व निजाम को 50 लाख रूपये प्रिवीपर्स के रूप में देना तय किया गया। पाकिस्तान ने संयुक्त राष्ट्र संघ में इस मुद्दे को बार–बार उठाया, परन्तु अमेरिका के सिवाय किसी ओर ने इसमें रूचि नहीं ली।

जूनागढ़

गुजरात में जूनागढ़ एक छोटी सी रियासत थी, जिसमें अधिकांश जनसंख्या हिन्दू, किन्तु शासक मुस्लिम था। उसने रियासत को पाकिस्तान में सम्मिलित करने की घोषणा कर दी, परंतु जनता द्वारा नवाब को पाकिस्तान में भागने पर विवश कर दिया गया। भारत

PEZZOTTAITE JOURNALS

Volume 7, Number 4, October – December' 2018
ISSN (Print): 2319-9059, (Online): 2319-9067
SJIF (2016): 7.194, SJIF (2017): 8.924
H5-Index: 1, H5-Median: 1, H-Citations: 1

सरकार द्वारा जनमत संग्रह करवाकर जूनागढ़ को भारत में शामिल कर लिया गया। जिसके लिए पाकिस्तान ने भारत विरोधी प्रचार किया।

शरणार्थियों का प्रश्न

देश के बँटवारे के बाद भारत से मुस्लिम पाकिस्तान गये व पाकिस्तान से हिन्दू भारत आये, मुस्लिम लीग द्वारा प्रायोजित साम्प्रदायिक दंगों के कारण पाकिस्तान में हिन्दू सुरक्षित नहीं थे। हिन्दू महिलाओं के साथ बलात्कार किये गए व हजारों व्यक्ति मौत के घाट उतारे गये। पाकिस्तान से आने वाले एक रेलगाड़ी में सभी हिन्दुओं को मौत के घाट उतार दिया गया, जब वह ट्रैन अटारी स्टेशन पहुंची तब उसमें कोई भी जीवित मुसाफिर नहीं था व रेलगाड़ी के डिब्बों पर लिखा था, '' पाकिस्तान का भारत की आजादी पर तोहफा। ''भारत की धर्मनिरपेक्ष सरकार द्वारा मुस्लिमों की यहाँ सुरक्षा की गई, परन्तु पाकिस्तानी हुकुमत ने हिन्दुओं की सुरक्षा का कोई प्रबन्ध नहीं किया। पाकिस्तान से विस्थापित लोगों की सम्पत्ति का मूल्य अधिक था, जबकि भारत में पाकिस्तान गये लोगों की सम्पत्ति का मूल्य कम था। बाद में भी शरणार्थी लगातार भारत आते रहे।

ऋण की अदायगी का प्रश्न

स्वाधीनता के बाद दोनों देशों के मध्य आमदनी और कर्ज का बटँवारा एक जटिल प्रश्न था। विभाजन के बाद भारत और पाकिस्तान दोनों सरकारों में लेनदारी को समान अनुपात में बॉटा जाना चाहिए था। परन्तु भारत सरकार ने सहृदयता दिखाते हुए ब्रिटिश सरकार के सारे ऋण का भार स्वीकार कर लिया। इसके उपलक्ष्य में भारत को 300 करोड़ रूपया प्रतिवर्ष पाकिस्तान सरकार से 5 वर्ष बाद दिया जाना तय हुआ। लेकिन पाकिस्तानी सरकार यह ऋण देने में टालमटोल करने लगी।

भारत–पाक युद्ध 1965

अप्रैल 1965 में अचानक पाकिस्तानी टुकड़ियां ने पहले कच्छ के रन में भारतीय क्षेत्र व फिर कश्मीर में घुसपैठ कर दी। यह घुसपैठ पूर्णतया एक योजना का हिस्सा थी। पाकिस्तानी सैनिक असैनिक वेष में कश्मीर में घुस आए थे। पाकिस्तान का यह विश्वास था कि कश्मीरी जनता, छापामारों का साथ देगी, जिससे वो कश्मीर पर अधिकार कर लेगे। इसी दरमियान पाकिस्तान की नियमित सेना ने थी अंर्तराष्ट्रीय सीमा रेखा (LOC) को पार करके भारतीय भू–भागों पर आक्रमण कर दिया। जिससे युद्ध पूर्णरूप के आरम्भ हो गया। संयुक्त राष्ट्रसंघ की सुरक्षा परिषद द्वारा दोनों देशों से युद्ध विराम की अपील की गई। 22–9–65 को दोनों देशों के मध्य युद्ध बंद हो गया। भारत को युद्ध में 750 वर्ग मील व पाकिस्तान को 210 वर्गमील भूमि मिली।

नहरी पानी विवाद

पंजाब में पाँच नदियाँ बारहमासी बहती हैं। झेलम व चिनाव पाकिस्तान के मध्य से और व्यास पूर्णतया भारत में बहती है। सतलुज व रावी दोनों देशों के मध्य से बहती है परन्तु भारत के नियंत्रण में वे दोनों मुख्यालय आ गए, जिससे नहरों के द्वारा पानी की पूर्ति की जाती थी। 1960 में प्रधानमंत्री नेहरू और राष्ट्रपति अययूब खाँ ने रावलपिंडी में एक समझौते पर हस्ताक्षर किये गए। 12–1–1961 से इस संधि की शर्तो को लागू कर दिया गया।

ताषकंद समझौता

सोवियत संघ के प्रधानमंत्री ने मध्यस्थता करके पाकिस्तानी राष्ट्रपति अयूब खाँ और भारत के प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री को वार्त्ता के लिए ताशकंद में आमंत्रित किया। 10 जनवरी को ताशकंद समझौता हुआ व जिससे दोनों देशों ने आपस में विभिन्न प्रकार के बिन्दुओं पर सहमति व्यक्त की। ताशकंद में ही लाल बहादुर शास्त्री जी को दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया।

PEZZOTTAITE JOURNALS

Volume 7, Number 4, October – December' 2018
ISSN (Print): 2319-9059, (Online): 2319-9067
SJIF (2016): 7.194, SJIF (2017): 8.924
H5-Index: 1, H5-Median: 1, H-Citations: 1

भारत–पाक युद्ध 1971

पूर्वी पाकिस्तान (बांग्लादेश) में शेख मुजीब के नेतृत्त्व में स्वाधीनता प्राप्ति का आंदोलन प्रारम्भ हुआ। याह्य खाँ ने बंगालियों पर अत्याचार प्रारम्भ कर दिये, जिससे प्रतिदिन हजारों की तादाद में शरणार्थी घबराकर भारत में आने लगे। 2–12–1971 को पाकिस्तानी वायुयानों ने भारत के हवाई अड्डों पर भीषण बमबारी आरम्भ कर दी। जिसका भारतीय वायुसेना द्वारा मुहतोड़ जवाब दिया गया। 16 दिसम्बर 1971 को ढाका में एक समारोह में भारत के ले. जनरल जगजीत सिंह अरोड़ा के समक्ष पाकिस्तानी जनरल नियामी द्वारा आत्मसमर्पण कर दिया गया।

बांग्लादेश स्वतंत्र हो गया। पाकिस्तान की 6 हजार वर्ग मील भूमि पर भारत ने अधिकार कर लिया। पाकिस्तान में सत्ता परिवर्तित होकर जुल्फिकार अली भुट्टो के हाथ में आ गयी। 28 जून 1972 को शिमला में दोनों नेताओं के मध्य मुलाकात हुई व 3 जुलाई 1972 को ऐतिहासिक ''शिमला समझौता'' हुआ।

पाकिस्तान द्वारा आतंकवाद को प्रोत्साहन

पाकिस्तान ने स्वयं के अस्तित्व से ही भारत में आतंकवाद को बढ़ावा देने में कोई कौर–कसर बाकि नहीं रखी है। 1993 में नवम्बर में हुए श्रृंखलाबद्ध बम विस्फोटो में भी पाकिस्तान का ही हाथ साबित हुआ है। एशिया में सोवियत संघ के प्रसार को रोकने के लिए अमेरिका व चीन द्वारा पाकिस्तान को गैर जरूरी सहायता व हथियार सदैव पहुँचाये जाते रहे है।

भारत के प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा फरवरी 1999 में दिल्ली–लाहौर–दिल्ली बस सेवा के उद्घाटन अवसर पर लाहौर की यात्रा करके ऐतिहासिक पहल की गई।

कारगिल संघर्ष

मई 1999 में कारगिल क्षेत्र में पाकिस्तान ने घुसपैठिए भेजकर नियंत्रण रेखा का उल्लघन किया। श्रीनगर–लेह राष्ट्रीय राजमार्ग का सम्पर्क तोड़ने के इन घुसपैठियों के प्रयास को भारतीय सेना ने विफल कर दिया। अत्यधिक सर्दियों में जब सेनाएँ चोटियों से नीचे मैदानी इलाको में उतर आती हैं, तब पाकिस्तानी घुसपैठियों ने धोखे से भारतीय चोटियों पर अधिकार कर लिया था। सर्वप्रथम एक पशुपालक ने इन विदेशियों को इन चोटियों पर बैठा देखकर घुसपैठ की सूचना दी थी। भारतीय सेनाओं ने 26 जुलाई 1999 में ऑपरेशन कारगिल विजय में विजय प्राप्त की। अंतर्राष्ट्रीय दबाव व भारतीय सेना की शानदार सफलता से पाकिस्तानी सेनाओं को पीछे हटकर संघर्ष करने के लिए बाध्य होना पड़ा।

आगरा शिखर वार्ता

12 अक्टूबर 1999 को पाकिस्तान के थलसेना अध्यक्ष द्वारा नवाज षरीफ़ सरकार का तख्ता पलटकर स्वयं को देश का शासक घोषित कर दिया। 14 जुलाई 2001 को आगरा शिखर वार्ता के लिए जनरल परवेज़ मुशर्रफ भारत आए। परंतु घोषणा पत्र सहमति के बिना राष्ट्रपति मुशर्रफ वार्त्ता को अधूरा छोड़कर पाकिस्तान लौट गए। जिससे पाकिस्तानी शासको के दोहरे व्यक्त्वि को साफ रूप में देखा जा सकता है।

संसद भवन परिसर में 13 दिसम्बर 2001 को पाकिस्तान समर्थित लश्कर–ए–तोइबा व जैष–ए–मौहम्मद के आतंकवादियों ने हमला कर दिया। भारत ने भी बदले में कड़ा रूख अपनाते हुए रेल व बस सेवा बंद कर दी। 20 जनवरी 2006 को अमृतसर व लाहौर व 24 मार्च 2006 को अमृतसर व ननकाना साहेब के बीच बस सेवा प्रारम्भ की गई। श्रीनगर–मुजफराबाद बस सेवा व समझौता तथा थार एक्सप्रेस का भी प्रारम्भ किया गया। मनमोहन सिंह के प्रधानमंत्री करने के दौरान भी आपत्ति विवादों को निपटाने के लिए भरसक प्रयत्न किए गए। 26 मई 2014 को प्रधानमंत्री मोदी ने स्वयं के शपथ ग्रहण समारोह में नवाब शरीफ को आमंत्रित करके सकारात्मक पहल की कोशिश की गई।

निष्कर्ष

इस विषय में कोई संदेह नहीं है कि भारत ने सदैव अपने पड़ौसी मुल्कों के साथ अच्छे व सौहर्दायात्मक सम्बंध बनाए रखने का भरसक प्रयत्न किया है। पाकिस्तान के संदर्भ में भी यह अपवाद नही है। बल्कि मुख्य तौर पर देखा जाए तो पाकिस्तान में जो जनता निवास कर रही है वह कभी भारत की ही जनता रही है, चाहे इनका धर्म कोई भी रहा हो। अगर भारत की विदेश नीति के विषय में देखा जाए तो भारत ने सदैव भाईचारे व दोस्ताना कदम के साथ–साथ एक दूसरे की मदद करने को प्राथमिकता प्रदान की है। लाल बहादुर जी, इंदिरा गाँधी जी द्वारा पाकिस्तान से ऐतिहासिक समझौतो को किया गया। परन्तु पाकिस्तान अपनी आदतों से बाज नहीं आया है। वर्तमान में भाजपा पार्टी को केन्द्र में पूर्ण बहुमत प्राप्त है, पर बातचीत की पेशकश सदैव, भारत के द्वारा ही की गई है। यह भविष्य के गर्भ में है कि पाकिस्तान के तहरीर–ए–हिंद पार्टी के प्रधानमंत्री इमरान खान इस विषय में कितना सकारात्मक दृष्टिकोण दिखाते हैं।

(लेखक किसी भी राजनीतिक पार्टी की विचारधारा से सरोकार नहीं रखता है, यह लेखक के स्वयं के निजी विचार है, जिसका उद्देष्य किसी की जन भावनाओं को ठेस पहुंचाने का बिल्कुल नहीं है।)

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

कोली, सी.एमः अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, साहित्य नगर, जयपुर

खन्ना, वी.एनः भारत की विदेष नीति, विकास पब्लिषिंग, नई दिल्ली, 1997

दीक्षित, जे.एनः भारतीय विदेष नीति, प्रभाव प्रकाषन, नई दिल्ली, 1999

मिश्रा, पी. के.: इण्डिया, पाकिस्तान, नेपाल एण्ड बांग्लादेश, संदीप पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1979

षर्मा, कालूरामः अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, पंचषील प्रकाषन, जयपुर

सिंह, जसजीतः भारतीय परमाणु षस्त्र (एक नई दिषा), प्रभात प्रकाषन, 1999

सिंह, योगेन्द्र पालः भारत की विदेश नीति – एक अध्ययन, आगरा, 1993

Retrieved from https://conceptiaseducation.blogspot.com/2016/06/a-varjkzvh-lacak-hkkjr-dh-fonsk-uhfr.html

Retrieved from http://www.worldfocus.in/hindi/magazine/indias-foreign-policy-series-1/

Retrieved from http://davcae.net.in/File/SA2%202015-16Social%20Science_Eng_Medium.pdf

Retrieved from http://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/43619/9/09dakshesh%205%20unit.docx

Retrieved from http://mdudde.net/books/MA/MA%20Public%20Admin/MA-Final/Foreign%20Policy%20of%20India-Fina...

Retrieved from http://www.raosjaipur.com/document/Modern%20India%20objectives%20question%20papers/MCQ-15%...

Retrieved from https://www.imrmedia.in/current-issue-hindi.php

Retrieved from https://www.kvkhagaria.ac.in/userfiles/file/IX%20SST%20HINDI.pdf

Retrieved from http://ncert.nic.in/NCERTS/l/khps207.pdf

Retrieved from http://www.nios.ac.in/media/documents/316courseE/Hg-23F.pdf

Retrieved from http://cbse.nic.in/hindi/CCE-material.pdf

Retrieved from http://www.nios.ac.in/media/documents/SrSec318NEW/Book2_318_H.pdf

Retrieved from http://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/45824/3/phd%20sanskrit.doc

Retrieved from http://www.lokniti.org/pdfs_dataunit/NES%20Series/India%20(Hindi).pdf

Retrieved from http://www.kvbaikunthpur.com/public/unifam/2244-55.pdf

Retrieved from http://jkstudycentre.org/Encyc/2014/12/3/334_11_43_26_334_05_32_20_gilgit-baltistan_hindi....

Retrieved from http://www.worldfocus.in/hindi/magazine/pakistan-afghanistan-and-belochistan-the-disturbed...

Retrieved from http://www.rcegroup.org/doc/4th/Social_Studies_SEMESTER-4.pdf

Retrieved from http://www.adhivaktaparishad.com/wp-content/uploads/2014/01/Nyayapravah-July-to-Sept-2013....

Retrieved from http://www.ncert.nic.in/NCERTS/l/khsy201.pdf

Retrieved from https://www.slideshare.net/jantakaaaina/janta-ka-aaina-12-august5-1-13954413

*****

BUSINESS PROPOSAL FOR CONFERENCES PUBLICATIONS IN JOURNALS / AS PROCEEDINGS

We are pleased to present this proposal to you as publisher of quality research findings in / as Journals / Special Issues, or Conference Proceedings under Brand Name '**Pezzottaite Journals**'. We aims to provide the most complete and reliable source of information on current developments in the different disciplines. The emphasis will be on publishing quality articles rapidly and making them available to researchers worldwide. Pezzottaite Journals is dedicated to publish peer-reviewed significant research work and delivering quality content through information sharing.

Pezzottaite Journals extends an opportunity to the 'Organizers of Conferences & Seminars' from around the world to get 'Plagiarism Free' research work published in our Journals, submitted and presented by the participants within the said events either organized by /at your Department / Institution / College or in collaboration.

As you know, the overall success of a refereed journal is highly dependent on the quality and timely reviews, keeping this in mind, all our research journals are peer-reviewed to ensure and to bring the highest quality research to the widest possible audience. The papers submitted with us, will follow a well-defined process of publication and on mutual consent. Publications are made in accordance to policies and guidelines of Pezzottaite Journals. Moreover, our Journals are accessible worldwide as 'Online' and 'Print' volumes.

We strongly believe in our responsibility as stewards of a public trust. Therefore, we strictly avoid even the appearance of conflicts-of-interest; we adhere to processes and policies that have been carefully developed to provide clear and objective information, and it is mandate for collaborating members to follow them.

Success Stories:

We had successfully covered 11 International Conferences and received appreciation from all of them.

If you have any query, editorinchief@pezzottaitejournals.net, contactus@pezzottaitejournals.net. We will respond to your inquiry, shortly. If you have links / or are associated with other organizers, feel free to forward 'Pezzottaite Journals' to them.

It will indeed be a pleasure to get associated with an educational institution like yours.

(sd/-)
(Editor-In-Chief)